जमींदार

हनुमान सिंह हरदासवाली
9116555496

क्योंकि मैं एक जमींदार हूँ,
बस ऐसे ही समझ आता हूँ ।।
मौसम के अनुसार बदलना,
बदल–बदल कर फसलें उगाना
क्योंकि
मै कोई नेता तो हूँ नहीं
जो हुकुमत चलाता है
जनता को गुमराह करके
अपना घर भर लेता है
मेरे जीवन की एक कमाई
फसलें अच्छी हो हमारी ।
जो होता है उसी में
गुजर–बसर कर लेता हूँ !
क्योंकि मैं एक जमींदार हूँ,
बस ऐसे ही समझ आता हूँ ।
बीमार होने का हक नहीं है मुझे
मैं आधी बीमारी में ठीक हो जाता हूँ ।।
रोटी, कपड़ा और मकान
इन आवश्यकता को जुटाता रहता हूँ
कभी मां–बाप के लिए
कभी भाई –भाभी के लिए
कभी पत्नी व बच्चों के लिए
जीता चला जाता हूँ
दुसरो की जरूरतों को पूरा करते–करते
एक दिन दुनिया छोड़कर चला जाता हूँ ।
क्योंकि मैं एक जमींदार हूँ
बस ऐसे ही समझ आता हूँ ।।
सर्दी गर्मी और बरसात
उमस भरे मौसम में भी
खेत में खड़ा रहूँ, दिन–रात हर घड़ी

मेरे जीवन में की कमाई से
पलते हैं जीव–जन्तु
कीट–पतंगे
पशु–पक्षी एक धड़ी
करता हूँ ख्वाहिशे पुरी ये सबकी
पर अपनी जरूरतों का जिक्र नहीं करता
क्योंकि मैं एक जमींदार हूँ,
बस ऐसे ही समझ आता हूँ ।।
देश चलाने वालों
कुछ ध्यान इधर
मेरे जीवन की ओर भी देखों
परिस्थितियों से लड़ता रहता हूँ
क्योंकि मैं एक जमींदार हूँ
बस ऐसे ही समझ आता हूँ ।।